खंड-3
(Part-III)

- **सल्तनत काल (1200 ई.-1526 ई.)**
- **मुगल काल (1526 ई. के पश्चात्)**

- **राजनीतिक :** 1. राजनीतिक विस्तार (राज्य, साम्राज्य एवं राजवंश)
  2. प्रशासन
- **आर्थिक :** कृषि, उद्योग, व्यापार, मुद्राएँ एवं नगरीकरण
- **सामाजिक :** समाज का क्षैतिज एवं लम्बवत् विभाजन तथा महिलाओं की स्थिति।
- **सांस्कृतिक :** धर्म (भक्ति एवं सूफी), भाषा एवं साहित्य, स्थापत्य कला, चित्रकला एवं संगीत।

KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

सल्तनत काल

इस्लाम की स्थापना के काल से ही इस्लाम की सेना हिन्दुस्तान जीतने का निरन्तर प्रयास कर रही थी। इस क्रम में अरब आक्रमणकारियों को 712 ई. में केवल सिंध विजय का अवसर मिला था, आगे उसने उत्तर भारत में विस्तार करना चाहा, तो उसे सफलता नहीं मिली। परन्तु मध्य एशिया से आए हुए तुर्कों ने अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त की। 11वीं सदी के आरम्भ में महमूद गजनी ने पंजाब को आधार बनाकर उत्तर भारत पर निरन्तर आक्रमण किया था, परन्तु उसने उत्तर भारत को प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लिया था। इसके विपरीत मुहम्मद गोरी ने 1192 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध जीतकर अजमेर और दिल्ली पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार, उत्तर भारत में तुर्की राज्य की स्थापना हुई।

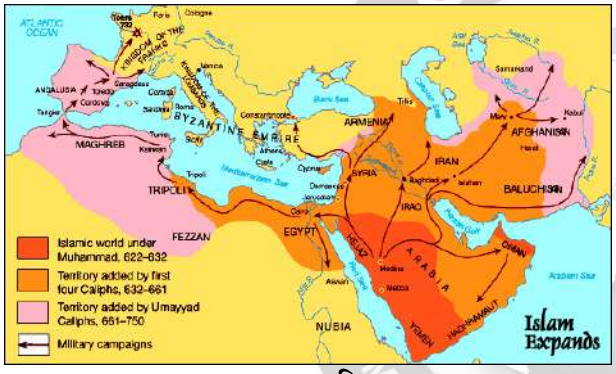

इस्लाम का विस्तार

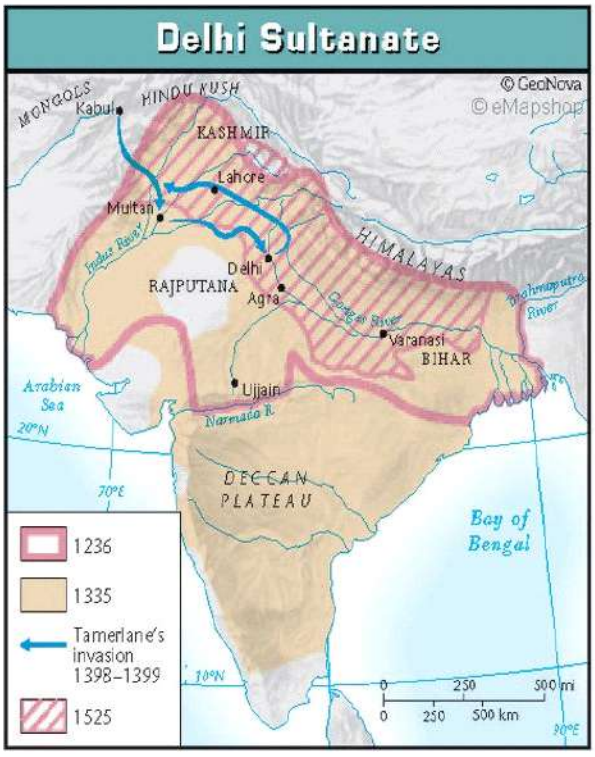

इल्बरी या मामलुक वंश
(1192 ई.-1290 ई.)

इस वंश का संस्थापक मुहम्मद गोरी (1192-1206) था, परन्तु मुहम्मद गोरी की मुख्य दिलचस्पी गजनी एवं गौर क्षेत्र में ही रही। हिन्दुस्तान में वास्तविक प्रशासन का काम उसके दास कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया। मुहम्मद गोरी ने 1194 ई. में चंदावर की लड़ाई में जयचंद को पराजित कर कन्नौज पर कब्जा कर लिया। 1206 ई. में मुहम्मद गोरी की मृत्यु हो गई।

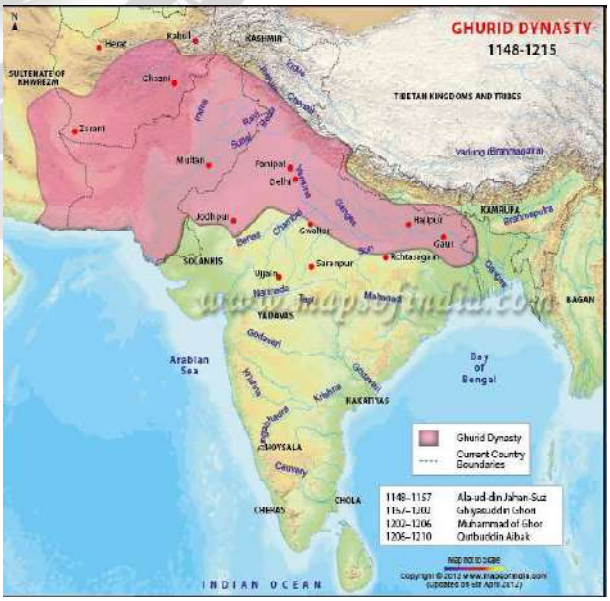

■ **कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.-1210 ई.)**- कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था। वह गंगा-यमुना के ऊपरी दोआब में विस्तार का कार्य करता रहा। इसके दरबार में हसन निजामी नामक विद्वान था, जिसने 'ताज-उल-मासिर' नामक ग्रंथ की रचना की थी। 1210 ई. में उसकी आकस्मिक

मृत्यु हो गई।

■ **इल्तुतमिश (1211 ई.-1236 ई.)**- इसे दिल्ली सल्तनत का संगठनकर्त्ता माना जाता है क्योंकि इसने न केवल स्वतंत्र हो चुके भारतीय राज्यों को दोबारा जीता, बल्कि इसने प्रशासनिक पुनर्गठन का भी काम किया। इसने 'तुर्क-ए-चहलगानी' नामक संगठन का निर्माण किया, जो 40 अमीरों का संगठन था और उन्हें महत्वपूर्ण पद दिए गए थे। फिर इसने गंगा-यमुना दोआब के आर्थिक महत्व को समझते हुए वहाँ मुस्लिम जनसंख्या को बसाया। यह पहला सुल्तान था जिसने खलीफा से शासन करने की खिल्लत प्राप्त की। यह सल्तनत काल का पहला वैधानिक सुल्तान था।

■ **रजिया (1236 ई.-1240ई.)**- रजिया एक योग्य शासिका सिद्ध हुई, परन्तु अमीरों और उलेमाओं की ईर्ष्या के कारण वह अधिक समय तक पद पर नहीं बनी रह सकी और 1240 ई. के कैथल के युद्ध के बाद रजिया की हत्या हो गई।

■ **बहराम शाह (1240-1242ई.)**- इसके काल में 1241 में तैर बहादुर के नेतृत्व में मंगोलों का पहला आक्रमण हुआ।

■ **मसूद शाह (1242-1246 ई.)**

■ **नसीरुद्दीन मुहम्मद (1246-1266 ई.)**-यह इल्तुतमिश का सबसे छोटा पुत्र था। इसके काल में वास्तविक शक्ति तुर्क-ए-चहलगनी के एक सदस्य बलबन ने अपने हाथों में ले ली थी। इसके दरबार में 'मिन्हाज-उस-सिराज' नामक लेखक को संरक्षण मिला था जिसने फारसी रचना 'तबकात-ए-नासिरी' लिखी।

■ **बलबन (1266-1286 ई.)**- बलबन को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संगठनकर्त्ता माना जाता है। यद्यपि वह तुर्क-ए-चहलगनी का सदस्य रहा था, फिर भी उसने सुल्तान के पद को मजबूत बनाने के लिए तुर्क-ए-चहलगनी की शक्ति को तोड़ दिया। उसने ही सल्तनत काल में मंगोल नीति की नींव डाली थी तथा मंगोल आक्रमण के विरुद्ध उत्तर-पश्चिम में दो सुरक्षा पंक्तियाँ बनवाईं।

■ **कैकुबाद (1286-90) :**

बलबन की मृत्यु के पश्चात् उसका पौत्र कैकुबाद उसका उत्तराधिकारी हुआ। वह एक कमजोर एवं अयोग्य शासक था। उसके समय में राजनीतिक अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिसका लाभ उठाकर समाना के मुक्ती जलालुद्दीन खिलजी ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

खिलजी वंश
(1250 ई.-1320 ई.)

■ **जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.)**- इस वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी था। उसने 1290 ई. से 1296 ई. के बीच शासन किया था। उसके भतीजे तथा दामाद, अलाउद्दीन खिलजी, ने उसे गद्दी से हटाकर सत्ता पर कब्जा कर लिया।

■ **अलाउद्दीन खिलजी (1236-1314 ई.)**- इसके सिंहासनारोहण के साथ हिन्दुस्तान में साम्राज्यवाद का युग आरम्भ हुआ। इसके अन्तर्गत जो साम्राज्यवादी विस्तार की प्रक्रिया आरम्भ हुई, वह मुहम्मद-बिन-तुगलक के काल में अपने चरम पर पहुँच गई।

सर्वप्रथम उसने उत्तर भारत में गुजरात (1299 ई.), रणथम्भौर (1301 ई.), चित्तौड़ (1303 ई.), मालवा (1305 ई.) आदि को जीतकर एक साम्राज्य का निर्माण किया। फिर उसने मलिक काफूर नामक सेनापति के नेतृत्व में दक्षिण भारत में सैनिक अभियान भेजे- पहला सैन्य अभियान 1306-07 ई. में देवगिरी एवं वारंगल के विरुद्ध और दूसरा सैन्य अभियान द्वारसमुद्र एवं पांड्य राज्य के विरुद्ध। अलाउद्दीन खिलजी इन राज्यों से राजस्व एवं उपहार प्राप्त करता रहा, परन्तु दक्षिण के राज्यों को उसने प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लिया।

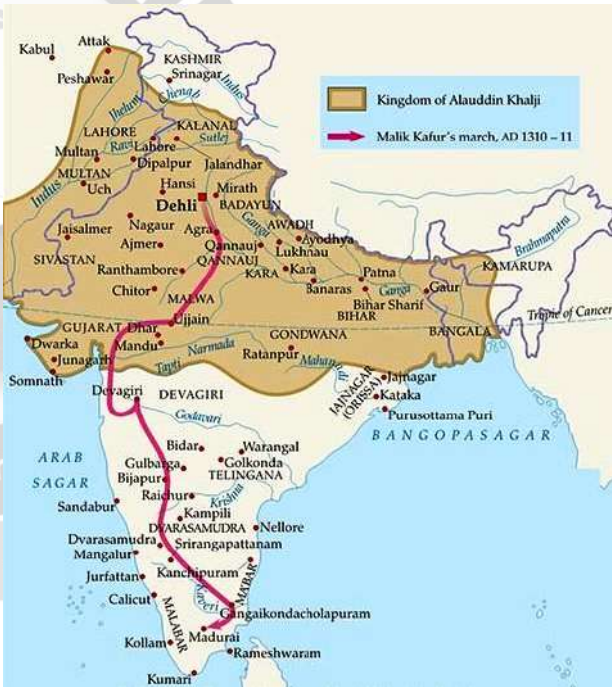

■ **मुबारक शाह खिलजी (1316-1320 ई.)**- मुबारक शाह खिलजी प्रथम सुल्तान था जिसने अपने को खलीफा घोषित किया तथा 'अल-बसिक-बिल्लाह' की उपाधि धारण की। इसके अतिरिक्त उसने अलाउद्दीन खिलजी के सीमित विस्तार कि नीति को उलटते हुए देवगिरि को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

■ **खुसरो शाह (1320 ई.)** - मुबारक शाह खिलजी की मृत्यु के पश्चात् उसके मंत्री खुसरो ने 'खुसरोशाह' के नाम से अपने को सुल्तान घोषित कर दिया। 1320 ई. में दीपालपुर के गवर्नर गाजी मलिक ने दिल्ली पर आक्रमण कर खुसरो को मार डाला और तुगलक वंश की नींव डाली।

तुगलक वंश
(1320 ई.-1412 ई.)

■ **गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)**- गाजी मलिक गयासुद्दीन तुगलक नाम से सुल्तान बना और उसके काल में ही उसके पुत्र जौना खाँ ने 1324 ई. में वारंगल को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। 1325 ई. में बंगाल अभियान से लौटते हुए एक दुर्घटना में गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गई।

■ **मुहम्मद-बिन-तुगलक (1325-51 ई.)**- मुहम्मद-बिन-तुगलक का काल इतिहास का एक बड़ा ही विवादास्पद काल रहा है। यद्यपि उसकी सोच प्रगतिशील थी, परन्तु उसकी नीति विफल होती चली गई। इस कारण उसके विरुद्ध विद्रोह हुआ और इसका साम्राज्य विघटित हो गया।

उसने सुदूर दक्षिण तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर एक अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। फिर उसने अनेक प्रयोग किए, यथा- राजधानी परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन, दोआब में प्रगतिशील खेती, खुरासान सैनिक अभियान तथा कराचिल अभियान। उसके सभी प्रयोग क्रमिक रूप से विफल होते चले गए। फिर उसके साम्राज्य में विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गई-

- 1335 ई. में अहसान शाह के नेतृत्व में माबर (मदुरा) राज्य स्वतंत्र।
- 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का के अधीन विजयनगर राज्य स्वतंत्र।
- 1338 ई. में फकरुद्दीन मुबारक शाह के अधीन बंगाल स्वतंत्र।
- 1347 ई. में बहमन शाह के अन्तर्गत बहमनी राज्य स्वतंत्र।

■ **फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई.)**- फिरोजशाह तुगलक का बल निम्नलिखित नीतियों पर रहा था -

1. उसने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाई, ताकि असन्तुष्ट उलेमाओं को खुश कर सके।
2. उसने राज्य को लोक कल्याणकारी स्वरूप दिया।
3. उसने व्यापक निर्माण कार्य पर बल दिया तथा संगीत पर कुछ संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया।
4. उसने सिंचाई के विकास के लिए विशेष रूप में कार्य किया तथा यमुना और सतलज से नहर निकलवाई।

■ **फिरोजशाह तुगलक के पश्चात्**

फिरोजशाह तुगलक के बाद कमजोर शासकों का युग आरम्भ हुआ और एक के बाद दूसरे शासक बदलते रहे। इस वंश का अन्तिम शासक था नसीरुद्दीन महमूद। इसी के काल में 1398 ई. में हिन्दुस्तान पर तैमूर का आक्रमण हुआ। इसके बाद उसकी बची हुई प्रतिष्ठा भी धूमिल हो गई और फिर साम्राज्य के विघटन को बल मिला। 1401 ई. तक जाफर खान के नेतृत्व में गुजरात, दिलावर खान के नेतृत्व में मालवा तथा ख्वाजा जहाँ के नेतृत्व में जौनपुर स्वतंत्र हो गए। चूँकि ख्वाजा जहाँ को 'मलिक-उस-शर्क' की उपाधि मिली थी, इसलिए जौनपुर के शासक 'शर्की राजवंश' के कहलाए। 1412 ई. में नसीरुद्दीन महमूह की मृत्यु हो गई। फिर तैमूर के पंजाब स्थित गवर्नर खिज्र खाँ ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

सैय्यद वंश
(1414 ई.-1451 ई.)

इस वंश का संस्थापक तैमूर का एक अधिकारी खिज्र खाँ था। खिज्र खाँ का उत्तराधिकारी मुबारक शाह हुआ। उसके दरबार में ही याहिया-बिन-अहमद 'सरहिन्दी' नामक लेखक ने 'तारिख-ए-मुबारकशाही' लिखी। इस वंश का अन्तिम शासक आलम खान हुआ, जिसने अपने सेनापति बहलोल लोदी के पक्ष में गद्दी त्याग दी। इस प्रकार लोदी वंश की स्थापना हुई।

लोदी वंश
(1451 ई.-1526 ई.)

यह हिन्दुस्तान में प्रथम अफगान वंश था और इसका संस्थापक बहलोल लोदी था। उसका उत्तराधिकारी सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.) एक योग्य सुल्तान था। उसने जौनपुर को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिलाया था। पूर्वी राजस्थान पर नियंत्रण के लिए उसने 1504 ई. में आगरा की स्थापना की थी। उसने अपने अमीरों को भी अनुशासित करने का प्रयत्न किया था। वह साहित्यिक जगत में 'गुलरुखी' के नाम से कविता लिखता था।

उसका उत्तराधिकारी इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.) हुआ। उसने अफगान अमीरों को अनुशासित करने का प्रयत्न किया था, अत: उन अमीरों ने विद्रोह करना शुरू कर दिया। 1518 ई. में उसने मेवाड़ के शासक महाराणा सांगा पर आक्रमण किया, परन्तु खटोली/खतोली के युद्ध में पराजित हो गया। इस

प्रकार, उत्तर भारत पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए राजपूतों और अफगानों के बीच संघर्ष हो रहा था, तभी बाबर हिन्दुस्तान के दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के विरूद्ध लड़ता हुआ वह मारा गया।

गौरतलब है कि, 16वीं शताब्दी का काल उत्तर भारत में राजनीतिक संक्रमण का काल था। इस समय भारत की राजनीतिक स्थिति विकेन्द्रीकृत थी जो किसी भी आक्रमणकारी के लिए उपयुक्त परिस्थिति होती है। इस समय दिल्ली का सुल्तान इब्राहिम लोदी एक केन्द्रीकृत साम्राज्य बनाने की कोशिश कर रहा था, तो वहीं दूसरी तरफ पंजाब का सूबेदार दौलत खाँ लोदी एवं इब्राहिम लोदी का चाचा आलम खाँ लोदी उसके इस कार्य को चुनौती प्रस्तुत कर रहे थे। इनके साथ-साथ राजपूत शासक राणा सांगा भी इब्राहिम की सत्ता को चुनौती दे रहा था। इब्राहिम को दिल्ली की सत्ता से उखाड़ने हेतु दौलत खाँ ने अपने पुत्र दिलावर खाँ के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल बाबर के पास भेजा ताकि बाबर दिल्ली से इब्राहिम को हटाकर आलम खाँ लोदी को शासक बना दे। इस घटना का विवरण बाबर स्वयं अपने जीवनी में देता है और कहता है कि "जब मैं काबुल में था तभी आलम खाँ लोदी और राणा सांगा के राजदूत आकर मुझसे मिले।" अतः इस स्थिति से स्पष्ट है कि आपसी राजनीतिक संघर्ष ने सल्तनत की राजनीति में बाबर के प्रवेश को आमंत्रित किया और आगे बाबर ने इब्राहिम को पराजित कर भारत में मुगल सत्ता की नींव डाली।

मुगल काल (1526 ई. के पश्चात्)

बाबर के आक्रमण के समय भारतीय उपमहाद्वीप का परिदृश्य

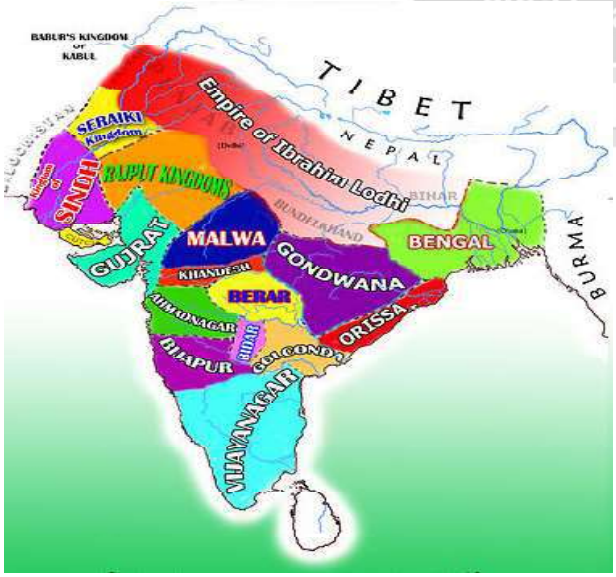

■ **बाबर (1526-1530 ई.)**- बाबर 1504 ई. में काबुल विजय करने के बाद निरन्तर हिन्दुस्तान की ओर देख रहा था। 1518 ई. में उसने भीरा के किले को जीता, जिस पर पहली बार तोपखाने का प्रयोग किया गया। फिर 1525 ई. में उसने पंजाब को जीत लिया। 1526 ई. में इब्राहिम लोदी के साथ पानीपत का प्रथम युद्ध लड़ा गया जिसमें उसने तुलगमा प्रणाली के साथ तोपखाने को जोड़कर युद्ध जीत लिया। फिर 1527 ई. में खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा को पराजित किया। 1528 ई. में उसने अलवर को जीता और 1529 ई. में उसने अफगानों से घग्घर का युद्ध जीता। परन्तु काबुल के विद्रोह को दबाने के लिए जाते समय 1530 ई. में लाहौर में उसकी मृत्यु हो गई।

■ **हुमायूँ (1530-1556 ई.)**- हुमायूँ को सिंहासनारोहण के शीघ्र बाद ही कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें सबसे बड़ी चुनौती थी पश्चिमी अफगान एवं पूर्वी अफगान की चुनौती। एक तरफ उसके महत्वाकांक्षी भाई कामरान ने काबुल और कंधार के साथ-साथ लाहौर, पंजाब एवं हिसार-फिरोजा पर कब्जा कर लिया। दूसरी तरफ, उसने पूर्वी अफगानों को 1532 ई. के दौराह के युद्ध में पराजित किया। फिर पश्चिमी अफगानों में बहादुर शाह से उसे चुनौती मिली, परन्तु 1534 ई. तक उसने मालवा और गुजरात की विजय की। यद्यपि ये दोनों क्षेत्र उसके हाथ से निकल गए, परन्तु बहादुर शाह की शक्ति टूट गई।

पूरब में उसे सबसे अधिक चुनौती शेरशाह से मिली। 1539 ई. में चौसा के युद्ध और 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में शेरशाह के हाथों पराजित होने के बाद वह ईरान की ओर पलायन कर गया।

ईरान की सहायता से उसने अपने खोए हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त किया। उसने कामरान से कांधार (1545 ई.) और काबुल (1553 ई.) प्राप्त कर लिया। फिर शेरशाह की मृत्यु के पश्चात् विघटित अफगान साम्राज्य से लाभ उठाकर उसने पंजाब (1555 ई.) तथा दिल्ली और आगरा (1555 ई.) जीत लिया, परन्तु जनवरी 1556 ई. में एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई।

■ **अकबर (1556-1605 ई.)**- अकबर, भारत के महानतम शासकों में से एक था। वह न केवल साम्राज्य निर्माता था, अपितु उसने राज्य-नीति को एक पृथक दिशा दी। शासक बनने के शीघ्र बाद उसने बैरम खाँ की सहायता से सर्वप्रथम हेमू के विरूद्ध पानीपत का द्वितीय युद्ध जीता। फिर उसने 1556 ई. और 1560 ई. के बीच अजमेर, ग्वालियर और जौनपुर को जीता।

1562 ई. में उसके द्वारा मेड़ता विजय के पश्चात् अन्य राजपूत राज्य भी समर्पण करने लगे। फिर उसने 1573 ई. में गुजरात, 1575-76 ई. में बिहार, 1585 ई. में काबुल, 1586 ई. में कश्मीर का अधिग्रहण किया। 1601 ई. तक उसका साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में बरार, बालाघाट एवं खानदेश तक तथा पश्चिम में कांधार से लेकर पूरब में बंगाल तक फैल गया था।

■ **जहाँगीर (1605- 1627 ई.)**- जहाँगीर के काल में कोई बड़ा विस्तार नहीं हुआ। दक्षिण में शाहजादा खुर्रम ने अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा की सेना को पराजित किया इस पर खुश होकर जहाँगीर ने उसे 'शाहजहाँ' की उपाधि दी। जहाँगीर के काल में ही पहली बार सिसोदिया वंश के शासक और महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी अमर सिंह ने समर्पण किया था, परंतु 1622 ई. में जहाँगीर के काल में कंधार पर ईरानियों ने कब्जा कर लिया था।

■ **शाहजहाँ (1628-1658 ई.)**- शाहजहाँ के समय बुंदेला सरदार जुझार सिंह ने विद्रोह किया था, फिर दक्कन के सूबेदार खान-ए-जहाँ लोदी ने विद्रोह कर दिया। अब शाहजहाँ ने अहमदनगर को जीतने का निर्णय लिया और फिर 1633 ई. में अहमदनगर को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

यद्यपि एक बार 1638 ई. में शाहजहाँ ने कंधार को प्राप्त कर लिया था, परन्तु 1648 ई. में मुगलों ने अंतिम रूप में कंधार को खो दिया।

■ **औरंगजेब (1659-1707 ई.)**- 1658 ई. में शाहजहाँ की बीमारी का फायदा उठाकर औरंगजेब अपने भाईयों के साथ उत्तराधिकार का युद्ध लड़ता रहा। फिर 1659 ई. में उसका सिंहासनारोहण हुआ। उसका शासनकाल अत्यधिक विवादास्पद है क्योंकि उसके विरुद्ध अनेक विद्रोह हुए, यथा- जाट विद्रोह, सतनामी विद्रोह, अफगान विद्रोह, राजपूत विद्रोह, सिख विद्रोह तथा मराठों के साथ संघर्ष।

सबसे बढ़कर वह दक्षिण में मराठा समस्या में उलझ गया। फिर उसने दूसरी गलती यह की कि दक्षिण में उसने अनियंत्रित विस्तार पर बल दिया तथा बीजापुर (1686 ई.) एवं गोलकुंडा (1687 ई.) को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया। फिर उसने कृष्णा नदी से दक्षिण विस्तार की नीति अपनाई, परन्तु उसकी नीति विनाशक सिद्ध हुई और फिर वह दक्षिण में 25 वर्षों के एक लम्बे संघर्ष में उलझ गया तथा 1707 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।